भविष्य हम रचेंगे, सितारे नहीं

जयंत वी. नार्लीकर

अठारहवीं शताब्दी के मराठा साम्राज्य के पेशवा शासकों में बुद्धिमान और काबिल समझे जाने वाले नाना फड़नवीस ने काशी के निकट करमानकी में पुल बनवाने का निश्चय किया। काशी के पंडितों ने इस काम को निर्विघ्न संपन्न करने के लिए अनुष्ठान किया, लेकिन दुर्भाग्यवश अनुष्ठानों और बार—बार कोशिशों के बावजूद नदी में ऐसी मजबूत जगह नहीं मिल पा रही थी, जिस पर निर्माण शुरू हो सके।

जब यह बात नाना को पता चली, तो उन्होंने बेकर नाम के एक ब्रिटिश इंजीनियर से संपर्क किया। बेकर पानी निकालने के लिए पंप लाया और जब वे नाकाफी सिद्ध हुए, तो कलकत्ता से अतिरिक्त मशीनरी लेकर आया। इन उपकरणों की सहायता से उसने काम पूरा कर दिया।

इतिहास के पन्नों से इस घटना को खोज निकालने का कारण यह है कि आज इससे सबक लेने की सख्त जरूरत है। आज जब हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर रहे हैं, हम जिन विकास योजनाओं को शुरू करेंगे, उन्हें पूरा करने में हमारी सहायता अनुष्ठान नहीं, विज्ञान और तकनीकी की प्रणालियां करेंगी।

मसलन जी एस एल वी का हाल का प्रक्षेपण ही ले लीजिए। इस उपग्रह प्रक्षेपण यान को छोड़ने की पहली कोशिश विफल रही। विफलता के कारण तलाशे और पहचाने गए। उचित सुधार करने के बाद फिर से इसका प्रक्षेपण किया गया और वह सफल रहा।

शनि और मंगल को मनाने से या ग्रहों के अनुसार प्रक्षेपण का शुभ मुहूर्त निकालने से कुछ होने वाला नहीं था। इस देश में आज जरूरत वैज्ञानिक सोच की है, जहां आप अपनी विफलताओं का हठधर्मिता से परीक्षण करें और तार्किक ढंग से सोच कर दोषनिवारक कार्रवाई करें।

दुर्भाग्यवश हमारे विश्वविद्यालयों में वैदिक ज्योतिष के नए विभाग प्रारंभ करने और धार्मिक अनुष्ठानों के कोर्स चलाने का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का हाल का निर्णय हमें वक्त से पीछे धकेल रहा है। यही नहीं, ज्योतिष को विज्ञान के रूप में दिखाने की कोशिश उसे ज्योर्तिविज्ञान कह कर की जा रही है।

क्या ज्योतिष विज्ञान है? यह प्रश्न वैज्ञानिकों से अकसर पूछा जाता रहा है और इसका जवाब भी वे बिलकुल साफ साफ शब्दों में देते रहे हैं। जवाब है—एक जोरदार 'नहीं'। विज्ञान कहलाने के लिए किसी विषय का विज्ञान की विधा के अनुरूप होना जरूरी है। विषय की आवश्यकता है कि बुनियादी मान्यताएं साफ—साफ और सुस्पष्ट शब्दावली में बताई जाएं। फिर इसके लिए जरूरत होती है तटस्थ प्रयोग की, जिसके नतीजे इस पर निर्भर न हों कि वह प्रयोग कौन करता है। और अंततः इसमें सिद्धांत और प्रयोग का अनवरत सिलसिला जारी रहना चाहिए, जिसमें पहले में की गई भविष्यवाणियों की दूसरे में जांच हो।

विश्वसनीय होने के लिए सिद्धांत में जांचे जाने योग्य भविष्यवाणियां की जानी चाहिए। इस उद्देश्य के लिए कार्ल पोपर ने बहुत कड़ा मानदंड रखा है कि भविष्यवाणी सिद्ध होने योग्य ही होनी चाहिए।

ज्योतिष इनमें से किसी भी कसौटी पर खरा नहीं उतरता। उसके बुनियादी पूर्वानुमान अस्पष्ट शब्दों में हैं। इसकी भविष्यवाणियां पोपर के ढंग से जांची नहीं जा सकतीं। इसके बावजूद यथासंभव नियंत्रित प्रयोग ज्योतिष के दावों को जांचने के लिए किए गए हैं और ये जांचें हमेशा असफल हुई हैं।

इन अध्ययनों पर काफी साहित्य उपलब्ध है, पर यह न तो आम आदमी तक पहुँचा है और न ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तक पहुंचा लगता है।

१९७० के मध्य में ही १८६ प्रमुख वैज्ञानिकों ने, जिनमें १८ नोबेल पुरस्कार विजेता भी शामिल थे, एक वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें बताया गया था कि क्यों ज्योतिष विज्ञान नहीं है और क्यों इसका व्यवहार समाज के लिए नुकसानदेह है।

अन्य बातों के अलावा उन्होंने यह सवाल भी उठाया था कि लोग ज्योतिष में विश्वास क्यों करते हैं? अनिश्चय के इस दौर में बहुत से लोग निश्चय करने के लिए मार्गदर्शन का सुख

* इस युग में हमारी सहायता विज्ञान करेगा, अनुष्ठान नहीं।
* ज्योतिष विज्ञान नहीं है, क्योंकि वह परीक्षण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।
* विवेकानंद भी यही मानते थे।
* यूजीसी का ज्योतिष प्रेम अनुचित है।
* इसके बजाय भारतीय ज्ञान के उपेक्षित भंडार को खोजा जाना चाहिए।

चाहते हैं। वे ऐसे भाग्य में विश्वास करना चहाते हैं जो ऐसी आसमानी ताकतों द्वारा पूर्वनिर्धारित है, जिन पर उनका नियंत्रण नहीं है। पर हम सब को दुनिया का सामना करना पड़ता है और हमें समझना होगा कि हमारा भविष्य हम पर ही आधारित है, सितारों पर नहीं।

इन वैज्ञानिकों ने ज्योतिष पर आपत्ति उठाने वाले वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने का असाामन्य कदम उठाया, यह बात दिखाती है कि वे इसके खतरे के प्रति कितने संजीदा थे, हालांकि पश्चिम में ज्योतिष इतना लोकप्रिय नहीं है।

जहां समाज के हर तबके के लोग इसे संजीदगी से लेते हैं, वहां इसका असली रूप दिखलाना और भी ज्यादा जरूरी है। कहीं ऐसा न समझा जाए कि केवल पश्चिमी विज्ञान ज्योतिष को गलत मानता है।

मैं यहां यह याद दिला दूँ कि भारत के महान विद्वानों, जैसे बुद्ध और विवेकानंद ने भी ज्योतिष के खिलाफ सुस्पष्ट शब्दों में विचार व्यक्त किए हैं। इसलिए यह दुखद है कि इस विषय पर उच्च शिक्षा की एक प्रमुख संस्था ने प्रतिष्ठा का ठप्पा लगा दिया है।

विश्वविद्यालयों को भेजे गए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के परिपत्र में वैदिक ज्योतिष की प्रशंसा ऐसे विषय के रूप में की गई है, जो हमें समय, उसके स्वभाव और गुण तथा मानव जीवन और अन्य घटनाओं पर उसके प्रभाव से अवगत कराता है।

इस तरह यह हमें समय को नियंत्रित करने और उसका अधिकतम उपयोग करने में सहायता देता है। यह विवरण किसी माल को बेचने की बात जैसा लगता है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग जैसी प्रतिष्ठित संस्था से आने के कारण विश्वसनीय भी लगता है। मगर एक समझदार ग्राहक को यह पूछने का हक है कि क्या इन दावों में से कोई भी तथ्य द्वारा सिद्ध हुआ है। मेरे सीमित ज्ञान के अनुसार तो ये दावे अपुष्ट हैं।

इतना कह लेने के बाद मुझे यह मानने वाला भी पहला व्यक्ति होने दीजिए कि हमारे प्राचीन ज्ञान के भंडार में एक विशाल खजाना अनछुआ पड़ा है। हल्दी के पेटेंट के लिए सफल संघर्ष ने दिखा दिया है कि ज्ञान की हमारी कई पारंपरिक धाराएं बेहद कीमती हैं, बजाय इसके कि पश्चिम वाले हमें बताएं कि क्या महत्वपूर्ण है, हमें उनकी खोज स्वयं करनी चाहिए।

इस तरह आयुर्वेद में भी चुनौतीपूर्ण संभावनाएं हैं और मस्तिष्क तथा शरीर के स्वास्थ्य के लिए योग के अध्ययन में भी। प्रमुख पुस्तकालयों में प्राचीन पांडुलिपियों की धूल भरी अवस्था एक आम दृश्य है।

यदि विश्वविद्यलाय अनुदान आयोग इन उपेक्षित क्षेत्रों में अध्ययन को प्रोत्साहन दे तो अपने अतीत में राष्ट्रीय अभिमान जगाने की दिशा में बहुत बड़ा काम करेगा। छद्म विज्ञान को सहारा देने से तो वह गलत संकेत ही भेजेगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मुख्यालय पर जवाहरलाल नेहरूका यह वक्तव्य बड़ी शान से लगा हुआ है, 'विश्वविद्यालय प्रतीक है मानवता का, सहिष्णुता का, तर्क का, वैचारिक साहस का और सत्य की खोज का। यह और ऊँचे लक्ष्यों के प्रति मानव जाति की निरंतर यात्रा का प्रतीक है। यदि विश्वविद्यालय अपने कर्तव्य का उचित ढंग से पालन करे, तो देश और देशवासियों का भला होगा.....'

सच है कि विश्वविद्यालय अनुदान .....आयोग अपने अस्तित्व के पांच दशकों के दौरान कला और विज्ञान दोनों में उच्च शिक्षा के सुधार और शोध की अनेक प्रशंसनीय चेष्टाएं करने का दावा कर सकता है।

सीमित बजट के बावजूद उसने विश्वविद्यालयों में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और भविष्य में ऐसा करने की और अधिक महत्वाकांक्षी ५ योजनाएं बनाने में सफलता पाई है। अंतर विश्वविद्यालय केन्द्र का उसका प्रयोग बेहद सफल हुआ है।

इस प्रबुद्ध परंपरा की पृष्ठभूमि में ज्योतिर्विज्ञान और कर्मकांड का अध्ययन शुरू करने का उसका हाल का निश्चय किसी व्यक्ति को यह पूछने पर विवश करता है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में सब ठीक ठाक तो है न?